INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
Impact Factor (RJIF): 5.63
www.historyjournal.net
IJH 2026; 8(1): 03-06
Received: 13-11-2025
Accepted: 14-12-2025

डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय
एसोशिएट प्रोफेसर, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, ज. रा.दि. राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय
एसोशिएट प्रोफेसर, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, ज. रा.दि. राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश, भारत

चित्रकूट के कुछ ऐतिहासिक स्मारक : एक अध्ययन

महेन्द्र कुमार उपाध्याय

DOI: https://www.doi.org/10.22271/27069109.2026.v8.i1a.610

सारांश
$24^0 24^0$–$25^0 12^0$ उत्तरी अक्षांश व $80^0 58^0$–$81^0 34^0$ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित[1] चित्रकूट का उल्लेख सर्वप्रथम वाल्मीकि कृत रामायण में प्राप्त होता है।

गोलाङ्गूलानुचरितो वानरर्क्षनिषेवितः।
चित्रकूट इति ख्यातो गन्धमादनसंनिभः।।[2]

पृथ्वी का वह भू–भाग जो प्रयाग के दक्षिण में तथा विन्ध्य पर्वत में स्थित है और जहाँ तपस्वियों का वास है, वह चित्रकूट है।

दक्षिणं यत् प्रयागस्य, विन्ध्यश्चैव पर्वतम्।
वर्षतद् चित्रकूटं नाम, तपस्वी यत्र सन्तति।।

चित्रकूट वह स्थल है जहाँ बहुवर्णी शिखरों वाली पहाड़ियाँ हैं। अर्थात विभिन्न प्रकार की धातुएँ यहाँ की प्रस्तर शिलाओं में मिलती हैं। एक लोक प्रचलित श्लोक में ऋषियों ने कहा है कि चित्रकूट की पर्वत श्रेणी सुवर्ण, रजत एवं मणि माणिक्य तथा बहुवर्णी शिलाओं से सुसज्जित है।

सुर्वणकूटं रजताभिकूटं माणिक्यकूटं मणिरत्नकूटम्।
अनेक कूटं बहुवर्ण कूटं श्रीचित्रकूटं शरणं प्रपद्ये।।

चित्रकूट जनपद दो प्रान्तों में विभक्त है, जिसका एक तिहाई भू–भाग उ0प्र0 एवं शेष म0प्र0 में आता है। इसके उत्तर में उत्तर–प्रदेश का कौशाम्बी, दक्षिण में म0प्र0 के सतना और रीवा तथा पूर्व में उ0प्र0 के प्रयागराज और पश्चिम में बांदा जनपद अवस्थित है।[3] चित्रकूट के कुछ प्रमुख ऐतिहासिक स्मारकों में गणेशबाग, कामदगिरि, रामघाट, गुप्तगोदावरी, हनुमानधारा, और स्फटिकशिला का उल्लेख किया जा सकता है।

शब्द–कुंजी : षटकोणीय, भित्तिप्रस्तर, प्राकृतिक कला, नैसर्गिक, वापी, मुखारविन्द, मत्यगजेन्द्रनाथ।

प्रस्तावना

चित्रकूट से 10 किमी की दूरी पर कर्वी–देवांगना मार्ग पर स्थित देश के प्राचीन गौरव तथा प्रसिद्धि के प्रतीक स्वरूप गणेशबाग पेशवा नरेशों की ऐतिहासिक धरोहर है। इसका निर्माण 19वीं सदी के प्रारम्भ में श्रीमन्त विनायक राव पेशवा ने अपने आमोद–प्रमोद के लिए करवाया था।[4] मेरी दृष्टि में इस ऐतिहासिक स्मारक का नामकरण गणेशबाग इसलिए किया गया होगा कि विनायक शब्द गणेश का पर्यायवाची है और इसके निर्माता पेशवा शासक विनायक राव थे। अतएव संभव है कि उन्होंने अपने नाम के पर्यायवाची शब्द गणेश का चयन किया हो, दूसरे यह स्थल बस्ती से 10 किमी दूर स्थित था जहाँ उस समय एक सुन्दर बाग रहा, जो आमोद–प्रमोद के लिए एक उपयुक्त स्थल था। इसलिए इसका नाम 'गणेशबाग' उपयुक्त समझा गया होगा। दूसरी दृष्टि से यह कि पेशवा मूलतः महाराष्ट्र के निवासी थे। महाराष्ट्र में गणपति पूजा का प्रचलन था और गणेश (गणपति) उनके आराध्य देव थे। संभव है कि अपने आराध्य देव गणेश की पूजा को लोक प्रिय बनाने के उद्देश्य से उन्होंने इस स्थल का नाम गणेश रखा हो। इस स्थल पर पहुंचने पर प्रवेश मार्ग के दाहिनी ओर स्थित स्मारक के मुख्य प्रवेश द्वारा के ऊपर गणेश की प्रतिमा एक शिलापट्ट पर उकेरी हुई दृष्टिगत है। जो उनकी गणेश के प्रति आस्था का द्योतक है। यहां की इमारतें भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। बीच में प्राचीन शैली का भव्य षट्कोणी पंच मन्दिर है, जिसके ऊपरी भाग में भित्ति प्रस्तरों की बारीक कटाई करके खजुराहो की भांति असंख्य मूर्तियां उत्कीर्ण की गई हैं। मन्दिर के गर्भगृह में किसी देवी–देवता की प्रतिमा सम्प्रति दृष्टिगत नहीं है। संभव है कि यह मूलतः एक विष्णु मन्दिर रहा हो क्योंकि मन्दिर के शिखर पर गोवर्धनधारी कृष्ण, विष्णु के मत्स्यावतार, नृसिंह अवतार तथा शेषशायी विष्णु का अंकन देखा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त रथारूढ़ सूर्य, समुद्र–मन्थन के साथ कामप्रधान मूर्तियों का अंकन देखा जा सकता है। जो धर्म पर तंत्र के प्रभाव का संकेतक है। सामने एक सरोवर है, जिससे इसकी शोभा और अधिक बढ़ जाती है। पश्चिमी भाग में पांच खण्डों की एक वापी है, जिसमें कुएं और वापी का अद्भुत सामंजस्य है। वर्तमान में इसके तीन खण्ड दिखाई पडते हैं जिसके दो खण्ड में पानी भरा रहता है और ऊपरी हिस्सा खाली दिखता है। इस प्रकार यह जलप्रबन्धन की ओर उनकी रूचि का संकेतक है। मंदिर के ऊपर शिलापट्टों पर उत्कीर्ण मूर्तियों के आधार पर इस स्थल को मिनी खजुराहो भी कहा जाता है।[5]

कामदगिरि

कामदगिरि का प्राचीनतम नाम चित्रकूटगिरि था। अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र श्रीराम अपने बनवास काल में जब प्रयागराज स्थित भरद्वाज आश्रम पधारे तब भरद्वाज मुनि ने उन्हें चित्रकूटगिरि पर निवास करने की सलाह दी। 'चित्रकूटगिरि करहु निवासू, तंह तुम्हार सब भॉति सुपासू'।[6] कामदगिरि पर्वत में कामदा नाम की देवी की प्रतिष्ठा थी। जब श्री राम बनवास के समय में चित्रकूट आये थे तो उन्होंने इन्हीं कामदा देवी की अर्चना की थी। इस देवी ने श्री राम की पूजा से प्रसन्न होकर उन्हें आर्शीवाद दिया और वरदान मांगने को कहा। तब श्रीराम ने उनसे कहा कि यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो दुष्ट दानवों के संहार करने का वर दें। कामना देवी के आर्शीवाद से श्री राम ने रावण सहित अनेक राक्षसों का वध करने में सफलता प्राप्त की। अतएव, इस पर्वत पर स्थित कामदा देवी ने श्री राम के मनोरथ को पूर्ण किया था। अतः कामनाओं को पूर्ण करने के कारण यह पर्वत कामदगिरि नाम से ख्यात हुआ। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने अपने ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस में उल्लिखित किया है कि–कामद भे गिरि रामप्रसादा, अवलोकत अपहरत विषादा।।[7]

इस पर्वत पर स्थित इस मन्दिर में प्रवेश करने के लिए चारों दिशाओं में चार द्वार हैं। आज भी चारों द्वार मुखारविन्द के नाम से प्रसिद्ध हैं। परिक्रमा मार्ग पर भरतमिलाप मन्दिर बना हुआ है। श्री राम और भरत का मिलन भी इसी स्थान पर हुआ था।

मन्दिर के द्वितीय मुखारविन्द को जनश्रुति में प्राचीनतम मुखारविन्द माना जाता है। इस मुखारविन्द पर बनी हुई प्रतिमा में भगवान के मुख में सात शालिग्राम की मूर्तियां विद्यमान हैं। मन्दिर के बगल में महाराजा पन्ना ने रामचन्द्र की मूर्ति भी स्थापित करवायी थी। गर्भगृह में कामतानाथ की प्रतिमा स्थापित है। कामतानाथ के मुख से कभी दुग्ध एवं कभी जल की धारा प्रवाहित होती है।

मन्दिर से चल कर पांच किमी परिधि वाली कामदगिरि परिक्रमा मार्ग में देवी–देवताओं के लगभग 500 मन्दिर बने हुए हैं। परिक्रमा मार्ग उ0प्र0 एवं मध्य प्रदेश से होकर गुजरता है।

यहां प्रत्येक मास की आमावस्या को रामघाट पर स्नान एवं कामतानाथ की परिक्रमा करने हेतु लाखों श्रद्धालु एवं दर्शनार्थी आते हैं।

रामघाट

पयस्विनी–मन्दाकिनी का यह प्रमुख घाट है। राघवप्रयाग घाट के उत्तर दिशा के घाट को रामघाट कहते हैं। इस घाट के सम्बन्ध में यह किंवदन्ती है कि तुलसीदास जी की पूजा के समय चन्दन का लेप स्वयं श्रीराम किया करते थे

चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीड़।
तुलसीदास चन्दन घिसै तिलक देत रघुवीर।।

इस घाट पर गोस्वामी तुलसीदास को श्री रामदूत हनुमान के शुक रुप में स्मरण कराने से श्री राम, लक्ष्मण तथा सीता के दर्शन प्राप्त हुए थे। रामघाट के ऊपर यज्ञवेदी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि ब्रह्माजी ने यहॉ यज्ञ किया था। रामघाट पर मत्यगयेन्द्रनाथ नामक एक प्रसिद्ध शिव मन्दिर है। कहा जाता है कि वनवास–प्रवास के अवसाद से मुक्ति हेतु भगवान श्री राम ने इस घाट पर एक शिवलिंग की स्थापना की थी जो मत्यगयेन्द्रनाथ के नाम से विख्यात है। शिवपुराण के अष्टम खंड के दूसरे अध्याय में मतगजेन्द्रनाथ भगवान के बारे में वर्णन है। ब्रह्माजी के यज्ञ में मदमस्त हाथी की तरह झूमता हुआ यह शिवलिंग प्रगट हुआ था। इसलिए इनका नाम मतगजेन्द्रनाथ/मत्यगयेन्द्रनाथ है।[8] मान्यता है कि मत्यगयेन्द्रनाथ के दर्शन से शोक, भय, अवसाद से मुक्ति मिलती है।[9]

गुप्तगोदावरी

चित्रकूट से 19 किमी की दूरी पर स्थित गुप्तगोदावरी निर्मल प्राकृतिक जल स्त्रोतों से आप्लावित एक विशाल गुफा है। गुफा के अन्दर निरन्तर झरने का जल प्रवाहित होता रहता है। गुफा से जल धारा बाहर आकर दो कुण्डों में गिरती है और वहीं लुप्त हो जाती है, इसलिए इसे गुप्तगोदावरी कहते हैं। गुफा के अन्दर घुटने तक पानी से होकर जाया जाता है।

यहां प्राकृतिक रूप से पर्वत पर निर्मित दो प्राचीन गुफायें हैं। प्रथम गुफा में 49 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। एक लम्बी गुफा से निरन्तर जल स्राव होता रहता है। इसके अन्दर एक कुण्ड़ है जिसे सीता कुण्ड़ कहते हैं, यहीं गुफा के बाहर एक पंचमुखी शिव की मूर्ति है जो हजारों वर्ष पुरानी है। दीवार पर एक लेख उत्कीर्ण है जो राजा अमान सिंह से सम्बन्धित है। गुफा के द्वार पर शेषावतार की मूर्ति है। वहीं पर एक दूसरी विशाल गुफा है जिसका ऊपरी भाग काफी ऊँचा है। छत पर एक ऐसा पत्थर लटका हुआ है जो हिलता रहता है। इसे लोग खटखटा चोर कहते हैं, जिसके पीछे अनेक किंवदन्तियॉ जुड़ी हुई हैं।[10]

हनुमानधारा

विन्ध्यपर्वत श्रृंखला की उपत्यका में संकर्षणगिरि नामक पर्वत है। यह पर्वत कामदगिरि के पूर्व दिशा में स्थित है। इसी पर्वत में हनुमानधारा नामक पवित्र तीर्थ स्थित है। वृहदचित्रकूटमाहात्म्य नामक ग्रन्थ में इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है।[11] रामघाट से 4 किमी पूर्व एवं कर्वी से 12 किमी दक्षिण की ओर धरातल से 360 सीढ़ियां चढ़ने पर हनुमान जी के विराट स्वरूप का दर्शन होता है। इस मन्दिर में 75 सीढ़ी पहले एक पंचमुखी हनुमान जी का मन्दिर है। इनके मस्तक पर चांदी का मुकुट शोभित है। बायें हाथ पर जलधारा बह रही है। यह जलधारा पाताल गंगा नाम से विश्रुत है। बताया जाता है कि जब हनुमान जी लंका दहन करने के पश्चात् बहुत तेज अग्नि उष्मा से व्याकुल थे तो हनुमान जी ने भगवान श्री रामचन्द्र से अनुरोध किया कि भगवान मेरे समस्त शरीर में अग्नि की गर्मी व्याप्त है, इसके निवारण हेतु कृपया कोई उपाय बताएं। तब श्री राम ने हनुमान जी से कहा कि आप चित्रकूट पर्वत पर जाइए और विराजिए। वहां पर पर्वत शिखर से आपके ऊपर अमृत तुल्य शीतल जलधारा गिरेगी, इससे आपके शरीर में व्याप्त गर्मी का शमन होगा। आज भी हनुमान जी की बाईं भुजा पर अविरल जल धारा प्रवाहित होती है। इस जल धारा को दो कुण्डों में एकत्रित किया जाता है। इसका जल शीतल एवं मृदु है। भक्तों का मानना है कि इस जल के स्नान एवं सेवन से अनेक रोगों–व्याधियों से मुक्ति मिलती है। यह एक प्राकृतिक एवं दैवी आश्चर्य है। इस जलधारा के निर्गम का स्रोत अदृश्य तो है ही परन्तु यह भी स्पष्ट नहीं होता कि कुंड में गिरने के बाद यह जल कहॉ जाता है। गर्भगृह में हनुमान जी की 6 फिट की विशाल प्रतिमा स्थापित है। नेत्रों पर चांदी मढ़ी हुई है। मस्तक पर चांदी का मुकुट एवं छत्र शोभित हैं। हनुमानधारा के ऊपर 100 सीढ़ियां चढ़ने पर सीता रसोई है। इस पर्वत श्रेणी के मात्र दर्शन करने से ही भय–ताप का नाश हो जाता है।[12]

स्फटिकशिला

चित्रकूट से 4 किमी दक्षिण सतना मार्ग की बाईं ओर मन्दाकिनी के तट पर स्फटिक शिला स्थित है। कहा जाता है कि वन विहार के श्रम से थक कर श्री राम पत्नी सीता के साथ इसी शिला पर विश्राम करते थे। इस शिला के बारे में यह भी मान्यता है कि मई–जून की भीषण तपीश में भी यह गर्म नहीं होता है।[13] 2008 के पूर्व तक यह शिला पूरी तरह से खुले हुये आसमान के नीचे थी लेकिन 2008 में भक्तों ने इसके ऊपर छत का निर्माण करा दिया है। इन्द्रपुत्र जयन्त ने श्री राम के बल की परीक्षा लेने के लिए अपने को तैयार किया। श्री राम और सीता इसी शिला

पर बैठे हुए थे। जयन्त कौए का रूप धारण कर सीता के चरणों में चोंच मारकर भागा। सीता जी के चरणों से रक्त बहने लगा। श्री राम ने देखा कि सीता जी के चरणों से रक्त बह रहा है तो उन्होंने एक सींक का बाण बनाकर कौए के ऊपर छोड़ दिया। श्री राम के मंत्र से प्रेरित बाण कौए का रूप धारण कर जयन्त के पीछे दौड़ा। जयन्त रुपी कौआ अपने असली स्वरूप में पिता इन्द्र के पास पहुँचा और प्राणों की रक्षा की प्रार्थना की। अन्त में भयभीत जयन्त ने श्री राम के चरण पकड़ कर अपनी रक्षा की प्रार्थना की। श्री राम ने दण्ड स्वरूप उसे काना करके छोड़ दिया। प्रमाणस्वरूप मन्दाकिनी के उस पार एक पहाड़ी जयन्त नाम से ख्यात है।[14]

सन्दर्भ

1. उपाध्याय, महेन्द्र कुमार; 'चित्रकूट : ऐन आर्किओ–रिलीजियस स्टडी' नई दिल्ली, 2014, पृ0–01
2. वा0रा0, 2,54,29
3. उपाध्याय, महेन्द्र कुमार; 'चित्रकूट : ऐन आर्किओ–रिलीजियस स्टडी' नई दिल्ली, 2014, पृ0–01
4. उपाध्याय, महेन्द्र कुमार; 'चित्रकूट : ऐन आर्किओ–रिलीजियस स्टडी' नई दिल्ली, 2014, पृ0–81
5. चित्रकूट सूचना कोष; पृ–1 5, चित्रकूट (उ0प्र0 पर्यटन निदेशालय)
6. श्रीरामचरित मानस; 2.131.3; अन्ताराष्ट्रिय श्रीरामचरित मानस अनुसंधान केन्द्र जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ0प्र0), 2014
7. वही, 2.278.1
8. दैनिक जागरण (बांदा–चित्रकूट संस्करण) 18 जुलाई 2025, पृ0–04
9. चित्रकूट, (पर्यटन निदेशालय, उत्तर प्रदेश)
10. सिंह, संग्राम, चित्रकूट तीर्थस्थलों का माहात्म्य, पृ0–110–111
11. वही, पृ0–42
12. चित्रकूट दर्पण (अमर उजाला), 2018, पृ0–08–09
13. वही, पृ0–21
14. वही, पृ0–22